

धर्ममस्तु कवित्तसदा ॐ कौं २०० तिदगमुखी नूडाक मस्तु ॥ १२ ॥ ३५ दैवका  
 दगल्लेव, सर्व कार्यसि श्रुत, तमिमायं मृदं गत, मस्तु कवित्तसदा ॐ कौं २००  
 तिदका दगमुखी नूडाक मस्तु, नूडाक मस्तु ००० तिदका दगल्लेव मस्तु  
 वदा, धायकयं जाति, निवलाक मस्तु ति ॥ १४ ॥ ००० तिदका दगल्लेव मस्तु

आशा मस्तु कवि  
 ASHA ARCHIVES

1819



ॐ नमः श्री कृष्णाय ॥ ॥ श्रीयार्चयवाच ॥ रुगवत्सुखावितालय विगमकनूपा  
निधन ॥ कृष्णिकावूयदद्याया मनुनामसहस्रक ॥ १ ॥ यूनकेलागजिघन, आरुया  
मनुसंहिता ॥ यवदीर्घदयाधूर्त, यवदगितसत्यध ॥ २ ॥ धृत्वाधनयिष्ठद्वी, म  
माकावर्तनधूना ॥ कवयाकवर्तनाथ, तस्मात्माकावर्तनमहसि ॥ ३ ॥ श्रीरुगवान्मवा  
च ॥ मनुनामसहस्रक, कथयामि वनानन ॥ गायत्रीययत्नन, धृत्वा निर्यसून

ध्वनी ॥ ४ ॥ ॐ नमः श्री कृष्णाय ॥ रुगवत्सुखावितालय विगमकनूपा  
कावर्तना, यूनकेलागजिघन ॥ सर्वकामार्थयाकयजयद्विनिथाग ॥ ॥ ॐ नमः श्री  
कृष्णाय ॥ रुगवत्सुखावितालय विगमकनूपा, साधिका ललितानिवा  
ना ॥ ॥ कान्तिकान्तमगीकान्ति, वरुणामामनादना ॥ कल्याणीसुरगादया, उगर्त  
ददयंगमा ॥ ५ ॥ गुरुदात्रमणीदक्षा, साधीसर्वासुर्मंगला ॥ वामारिकावतीरु



ह्रीः, कमनीयातिका मला ॥ १ ॥ रागातिवृद्धा मधूना, वतिनामा वति श्रिया ॥ सुना  
मां सालिनी गीता, वल्लभात्मा सुगीतला ॥ ८ ॥ मनात्मनी महामाया, मार्तण्डिनि  
नात्मिका ॥ महालक्ष्मी महागङ्गा, महादेवस्य वृषिणी ॥ ९ ॥ मातृश्वरी महानन्दा, म  
हानन्दा विधायिणी, मालिनी मधवी माध्वी, मधुवृद्धा मयात्कटा ॥ १० ॥ आनन्दकन्द  
विजया, वैद्यिणी वित्तवृषिणी ॥ सप्रसादी मूदी कान्ता, विन्दुनादस्य वृषिणी ॥ ११ ॥

वामणी कामकालिन्दी, कामदा कामवधूना ॥ रुद्रावधिका वधु, वामपुत्रा मूढ  
मालिका ॥ १२ ॥ अन्नपूर्णा महानृणा, रत्नगङ्गा रुद्रावधनी ॥ विविधविद्या विद्याङ्गी,  
रुद्रगङ्गा कलश्वरी ॥ १३ ॥ वैद्यन्या वृषिणी निर्या, निर्यातिर्यसनातनी ॥ क्षीकात्री  
कृष्णलीला, धनिप्रित्तसंरुवा ॥ १४ ॥ उन्मादिनी महादुर्गा, सप्रसन्ना सुनारिता  
॥ यवमातीदिनी सन्दा, यवमार्थस्य वृषिणी ॥ १५ ॥ यागेश्वरी यामवृद्धा, हंसिनी



मवहंसिनी न कला कलावती न ॥ १० ॥ द्रुम वर्म वा विणी ॥ ११ ॥ द्रुम धनिम ॥  
 स्वर्गा, व्यामय धनि वा सिनी न दाल ॥ १२ ॥ ला, वन ॥ १३ ॥ वन ॥ १४ ॥  
 विद्रुमा रुविगलाक्षी, विश्वरु विश्वनायिका ॥ १५ ॥ वरु विश्वरु विश्वनायिका ॥ १६ ॥  
 विरुविनी ॥ १७ ॥ विश्वनीरु विश्वनिवा, विश्वनायिका ॥ १८ ॥ विश्वनायिका ॥ १९ ॥  
 नाहिना, माननीमा धन ॥ २० ॥ नाहिनीमा ॥ २१ ॥ नाहिनीमा ॥ २२ ॥



अतनायसंदरा, त्विस्वर्गवसागत, ससर्वइष्टा, एवमायाया  
 यत्रमायद, ॥११॥ यथनादस्यदवनि, किंनसिधतिरुगत, तवनाउ  
 निर्मदवि, र्किपात्कथिर्गकत ॥१२॥ ॐ निसिधध्वनमहागच्छरु  
 ॐ श्रीसम्यद, गिववकुविनिर्गत, आ यइ द्वाव न सार्थ समाफ ॥ ॥

आशा अर्चना

ASHA ARCHIVES

1819

अथास्याऽकवर्च ॥ ॐ धनडवाच ॥ गृणुदविषयवक्त्राणि कवचैः सर्वसिद्धिदं । जः ० ला  
 धावयित्वा च, नयामूयतर्गकटात् । अह्लात्वादाकवर्चदवि, इर्गमर्गवयाजयत्  
 ॥ नवाध्यातिरुलंतस्य, यननननकुवजगत् ॥ इमादवीनिनऽयाउ, ललाटं गूलध  
 निनी ॥ वक्रक्रीखवनीयाउ, कर्णवत्वनवासिनी ॥ सुगंधानाणि कांयाउ, वदनस  
 र्वसाधना ॥ जिह्वायां वल्लिकादवी, ग्रीवां सोरुदिका तथा ॥ अणकवासिनीधरा, हो



वाह्वयवधामिणी। हृदयललितादधी। उदयसिंहवाहिनी॥ कर्णरुगवतीदधी-  
वाह्वयवधामिणी। महावलावर्जध्व, पादोत्तलवाहिनी॥ वर्धितासिदधि-  
र्ल, उलाकनक्षमतिक। नक्षत्रां सर्वगप्रभू, इन्दुदविनमाश्रुता॥ ७ ॥

ॐ तिथीकृदिकागुरु, इन्दुकवर्चसमार्य॥ ८ ॥ ७ ॥ गुरुमन्दु॥  
सिद्धिप्रीतल्लयनमहावृद्धादक ० माथन मानवाभयनजदा, साधिवृद्ध

यूनीजांती, गच्छतीनाप्रसंगय॥ १ ॥ वृद्धार्द्रसीनसाकातिष्ठ, कर्तुस्यदसकादि-  
क, सककातिकसककाटि, गलवां धिसदृशवाहयस्यक॥ २ ॥ अकुरुत्यायाया-  
हती। वंभयसनीनस्यसाधिवृद्धयूनी, यान्तिनिष्ठतीवलिवालरी॥ ३ ॥ ॐ वृद्धां  
वृद्धं ॐ ति, एकवकावृद्धादमल्लवृद्धार्द्रइमूषी, ध्रुव, उद्वर्गकनूतमदा, कलह-  
त्यमहाधार्न, मानदीनासदाहव॥ ४ ॥ ॐ किं ॐ किं ॐ तिइमूषीवृद्धादमल्ल॥



[illegible]

कमूषी धैवतवकीकनदावृणं, अवरु जायगनानी, यूरुवतिनिधय, ॐ कौं २४००ति  
सकमूषी नूडाकर्मणु ॥ १॥ नूडाकर्मणुसकमूषी धैवत, सनीननकीतसदायुषीनरुयनासि  
सदायुषीमरुधन, ॐ कौं २४००ति अरुसकमूषी नूडाकर्मणु ॥ १०॥ नूडाकर्मणुसकमूषी धैवत, उ  
वर्गकर्मणुसदा, सलकर्मणु २४००ति सदायुषीनरुयनासि, ॐ कौं २४००ति नव  
सकमूषी नूडाकर्मणु ॥ ११॥ नूडाकर्मणुसकमूषी धैवत, सलकर्मणु २४००ति सदायुषीनरुयनासि, ॐ कौं २४००ति नव